Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.38, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2019, VOL- 7/53

मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका

शुभ्रा श्रीवास्तव, Ph. D. &

एसोसिएट प्रोफेसर (बी०एड०), दिग्विजय नाथ पी०जी० कालेज, गोरखपुर

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शिक्षा देश की रीढ़ है। जिस प्रकार विकृत रीढ़ से एक व्यक्ति स्वस्थ नहीं हो सकता ठीक उसी *प्रकार विकृत शिक्षा व्यवस्था से देश का निर्माण नहीं हो सकता है। प्रत्येक समाज की अपनी कला,* संस्कृति एवं गौरवशाली परम्पराये होती हैं, जिन पर उसे गर्व होता है। हमारे समाज ने कहने को तो बहुत विकास किया है किंतु विकास की लंबी यात्रा ने अनेक दोषों को जन्म दिया है, जिससे समाज में अनेक विसंगतियां हो गई हैं। आज समाज में राजनीतिक, सांस्कृतिक, इत्यादि स्तर पर मूल्यों में गिरावट देखी जा सकती है। वर्तमान *वैश्विक* समाज की दशा देख कर यह कहना गलत नहीं होगा कि आज की शिक्षा व्यवस्था, परिवेश में कहीं कोई कमी अवश्य है, वह है मूल्यों का अभाव। आज राष्ट्रीय, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का अभाव एवं क्षरण सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है, जो व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के समक्ष एक गंभीर चुनौती के रूप में मुँह खोले खड़ा है। समाज में त्याग कर्तव्यनिष्ठा, क्षमा, संवेदनशीलता जैसे मानवीय मूल्य सिर्फ किताब के पन्नों तक ही सीमित होते जा रहे है यदि व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र एवं संतुलित विकास करना है, तो समाज में सत्य, प्रेम सहकारिता, सहयोग, सहानुभूति, सहिष्णुता बंधुत्व, का वातावरण उत्पन्न करना होगा। राष्ट्र की रक्षा उसकी एकता एवं अखण्डता को बनाये रखना है, आर्थिक समृद्धि लानी है तो मूल्यों के महत्व को प्रत्येक व्यक्ति को न केवल समझना होगा वरन उन्हें जीवन में भी उतारना होगा। मूल्यों को समझने एवं आत्मसात करने में शिक्षा का बड़ा योगदान है।

अब **प्रश्न** उठना स्वाभाविक है मूल्य क्या है ? इनका हमारे जीवन में क्या महत्व है ? वास्तव में देखा जाये तो मूल्य मानव व्यवहार को नियंत्रित एवं निर्देशित करते हैं। मूल्य का अभिप्राय उस वस्तु या क्रिया के उस गुण से होता है जिससे आनंद या आनंद की आशा प्राप्त होती है। वास्तव में जीवन मूल्य सदगुणों जैसे सदविचार, सदाचरण, सहिष्णुता, अनुशासन, मर्यादित भावना, कर्मनिष्ठा आदि का समूह है, जिसे मानव अपने संस्कारों एवं पर्यावरण के माध्यम से अपना कर अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जीवनशैली का निर्माण करता है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री एस.एम.जे. वुडस का कहना है, "मूल्य दैनिक व्यवहार को नियंत्रित करने का सामान्य सिद्धान्त हैं। मूल्य न केवल मानव व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं वरन अपने आप में आदर्श

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

और उद्देश्य भी हैं। जहाँ मूल्य होते हैं वहाँ न केवल यह देखा जाता है कि क्या चीज होनी चाहिए वरन यह भी देखा जाता है कि वह सही है या गलत।"

" The prosperity of a country depends not on the abundance of its revenue nor on the strength of its fortifications nor on the beauty of its public builders, but in its cultivated citizens, in its men of education, enlightment and character."

मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्यय है जो मनुष्य के भावात्मक पक्ष को विकसित करता है। मानव जीवन के लिये मूल्यों का वही महत्व होता जो किसी वस्तु के लिये उसकी निर्धारित कीमत या मूल्य होता है। जिस प्रकार से मूल्य किसी वस्तु की पहचान उसी प्रकार जीवन मूल्य किसी व्यक्ति की पूर्णता अथवा सार्थकता, से रूबरू कराते हैं। वास्तव में मूल्यों का सम्बन्ध विचार से होता है और विचार का कर्म से, यह मानव जीवन की सर्वोत्तम कृति है और यदि इस कृति में से हम जीवन मूल्यों को अलग कर दें तो मानव का इस धरती पर से जन्म लेने का *उद्देश्य* ही निष्फल हो जायेगा।

जीवन मूल्यों को आत्मसात करके व्यक्ति जीवन में, उस असंख्य भीड़ में उसी प्रकार से अलग नजर आता है जिस प्रकार से जब सूर्य निकलता है तो सभी को स्वतः पता चल जाता है वह किसी के परिचय का मोहताज नहीं होता। वास्तव में मूल्य वह अचल, अडिग, अमिट मानचित्र है जो हमें सही राह, सही दिशा दिखाता है, गलत राह या दिशा पर जाने से भटकते हुए रोकता है।

मार्टिन लूथर किंग के अनुसार, "अच्छा बर्ताव करने वाले नागरिक सुसंस्कृत, शिक्षित व्यक्ति, पुरोगामी विचार वाले, चरित्रमय सम्पन्न व्यक्ति देश की सच्ची सम्पत्ति हैं।"

वर्तमान परिवेश में जीवन में अति महत्वपूर्ण होते हुए भी मूल्यों की उपयोगिता को मनुष्य नकार रहा है और अपने भौतिकवादी दृष्टिकोण से जीना चाहता है। इसी विचार धारा के कारण मूल्यों का क्षरण हो रहा है। जिसके लिये भौतिकतावादी दृष्टिकोण, आध्यात्मिकता का अभाव, तर्क एवं बौद्धिकता का आधिक्य, औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण, जनसंख्या विस्फोट उपभोक्तावादी, संस्कृति मानवता का लोप, आत्म केन्द्रित विचारधारा, जातिवादी दृष्टिकोण जैसे अनेक कारक उत्तरदायी हैं। आज शिक्षा का व्यवसायीकरण एक गंभीर विषय है, व्यक्ति किसी न किसी तरह से धनोपार्जन करने में लगा हुआ है, वही छात्रों का उद्देश्य भी येनकेन प्रकारेण डिग्री प्राप्त करना हो गया जिसके लिये आज हम सभी अपने नैतिक कर्तव्यों को भूलते जा रहे हैं।

हमारे देश की प्राचीन शिक्षा व्यवसथा में सर्वस्वीकृत जीवन मूल्य था सत्यं, शिवं और सुन्दर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में यह स्वपनवत है। प्राचीन समय में शिक्षा प्रणाली में सर्वश्रेष्ठ जीवन मूल्य था अतीन्द्रयता अर्थात 'स्व' की पहचान या जीवन का उर्ध्वमुखी विकास। आज की शिक्षा का मूल्य है सांसारिकता (भौतिकता) या भौतिक सम्मुनति। पहले समष्टि पर जोर था आज व्यष्टि पर। पहले महत्वपूर्ण था समाज, परिवार तथा रिश्ता वहीं आज महत्वपूर्ण है व्यक्ति, उसकी आंकाक्षा और निजता। पहले काम्य था त्याग, आज है भोग। पहले जरूरी समझी गई थी परम्परा, ऐतिहासिकता, जड़ों से सम्बद्धता, अपनी

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पहचान। आज जरूरी समझी जा रही है जड़ों से विछिन्नता। पहले संयुक्त परिवार, सहजीवन अच्छा माना जाता था, आज एकल परिवार। पहले आश्रम (गुरूकुल) की शिक्षा श्रम आधारित *थी*, और एकाग्रता पर जोर दिया जाता था, वहीं आज सारा जोर बुद्धि पर है, शारीरिक श्रम अनुपस्थित है, मन का विकास, एकाग्रता गायब है। इस प्रकार प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था में प्रचलित जीवन मूल्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पूर्णतः परिवर्तित हो गये हैं।

आज का दौर मूल्यों के क्षरण, विघटन और संकट का है यह समय की सबसे बडी त्रासदी है कि आज जीवन के लिए सबसे जरूरी और महत्वपूर्ण मूल्य ही खतरे में हैं, देखा जाये तो आज शिक्षा के विभिन्न स्तरों में शिशु शिक्षा के पश्चात माध्यमिक स्तर पर से ही मूल्यों का संकट शुरू हो जाता है, अनुशासनहीनता, कक्षा में अनुपस्थिति, उद्ण्डता, परीक्षा में नकल का आरम्भ यहीं से शुरू हो जाता है। इस राह से आने वाला छात्र अपने पूर्व अर्जित संस्कारों के साथ उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश करता है जो पहले से ही शोर अव्यवस्था अशांति, भीड़, अराजकता, बाजारीकरण का केन्द्र बनी हुई है। जहाँ पहले छात्र अपने विद्यानुराग, श्रम, समर्पण एवं नैतिक प्रतिमानों हेतु जाने जाते थे आज नकल की खुली छूट करने की मांग करते देखे जाते है, नियमों का उल्लंघन करते देखे जाते हैं। परीक्षा में शुचिता एक मूल्य है जो आज खतरे मे है। आज शिक्षा क्षेत्र में ऐसे तमाम लोग प्रवेश कर रहे हैं जो न तो अपने प्रति गंभीर हैं, न ही पेशे के प्रति जिन्होनें शैक्षिक मूल्यों के समक्ष एक बड़ा संकट उत्पन्न कर दिया है।

इस प्रकार प्रेम शांति, सहकार, सेवा, सहिष्णुता, एकता जैसे सामूहिक मूल्यों से लेकर व्यक्तिगत जीवन में भी भारी गिरावट देखी जा सकती है जब कि श्रेष्ठतम मूल्यों का विकास हमारी विशेषता रही है। शिक्षा रूपी प्रक्रिया जो योग्य बालक निर्माण की प्रक्रिया है वह पूर्णतया व्यापारिक बन गई है।

उदारीकरण, भूमण्डलीकरण, निजीकरण वैज्ञानिक तकनीकी, एवं आर्थिक बदलाव जैसे कारकों का प्रभाव भी मानव दृष्टिकोण पर, उसकी अभिरूचियों पर पड़ा है। एक तरफ समाज में पूर्वस्थापित मूल्यों, मान्यताओं, में उहापोह की स्थिति बनी हुई है, वहीं दूसरी आर्थिक प्रगति ने छद्म आधुनिकता को जन्म दिया है। आज मानव ने व्यावसायिक मानव का रूप ग्रहण कर लिया है जिससे पाश्चात्य एवं 'भारतीय मूल्यों में विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न हो गई है। भौतिकता की अंधी दौड़ ने मानव को मानसिक रूप से पंगु बना दिया है। मानव आज इतना निस्तेज हो गया है कि अच्छे बुरे में अंतर कर पाने में असमर्थ हो रहा है। मानवीय संवेदनायें तो विलुप्त हो गई हैं। हिंसात्मक प्रवृत्ति में, जीवन की जटिलता में वृद्धि हो रही है। जाति संघर्ष, आर्थिक विषमता, राजनैतिक भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, सामाजिक असुरक्षा, अहम् की भावना, शोषण अत्याचार, कर्तव्यहीनता, तनाव, रोष, कुंठा, विश्वासघात, बेईमानी, अवसरवादिता एवं कथनी करनी में अंतर ने जीवन की शांति ही भंग कर दी है। उस प्रकार वर्तमान में मूल्यों के नकारात्मक दिशा में उन्मुख होने से मानव, समाज एवं राष्ट्र के जीवन का अर्थ ही बदल जा रहा है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वर्तमान परिवेश मूल्य क्षरण एक गंभीर चुनौती है क्योंकि मूल्य विहीन जीवन एवं शिक्षा का कोई अस्तित्व नहीं है। यदि हमें मानव का सर्वोत्तम विकास करना है तो प्रत्येक को जीवन मूल्यों की महत्ता न केवल समझना होगा वरन उसे अपने आचरण, व्यवहार में भी उतारना होगा, ठीक वैसा ही आचरण करना होगा जैसा हम दूसरों से चाहते हैं। शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चों में ऐसे विशिष्ट गुणों दृष्टिकोणों, सामाजिक मूल्यों एवं व्यवहारों का सकारात्मक दिशा में विकास किया जा सकता है जो उनके लिये, समाज के लिये हितकारी है। शिक्षा के विभिन्न *उद्देश्य* एवं लक्ष्य, मानव संसाधनों का विकास, मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठा, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, मानसिक, आध्यात्मिक स्वतंत्रता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि अच्छे जीवन के सिद्धान्त हैं, जिन्हें शिक्षा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित, संवर्द्धित व स्थानान्तरित किया जा सकता है, उसमें अभिवृद्धि की जा सकती है।

उक्त दृष्टिकोण से शिक्षा के सम्मुख यह चुनौती है कि मूल्य परक शिक्षा हेतु न केवल उपर्युक्त प्रशिक्षण दे वरन व्यावहारिक रूप में उन्हें उतारने हेतु अधिक उपयोगी परिस्थितियों का भी निर्माण करें जिसके लिये सिर्फ विद्यालय एवं शिक्षक को ही नहीं वरन अभिभावक, माता–पिता, समाज तथा जनसंचार के माध्यम सभी को अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करना होगा। इसके लिये पाठ्यक्रमों में केवल जगह देकर इन मूल्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता वरन व्यावहारिक स्तर पर व्यक्तिगत स्वार्थों को पीछे रखकर, व्यापक चिंतन, मनन करके उसकी प्राप्ति हेतु तत्पर होना होगा। गुरू एवं शिष्य में भावात्मक सम्बन्ध होता है अतः उसे शुद्ध आचरण प्रदर्शित करते हुए शिक्षार्थी के समक्ष रोल मॉडल बनना होगा और नवीन चेतना निर्मित करनी होगी। हमारे देश सहित अन्य देशों में जितनी भी समितियों, शिक्षा आयोगों का गठन किया गया किसी न किसी रूप में मूल्यवर्द्धन पर, मूल्यों की महत्ता पर जोर दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी कहा गया कि , "समाज में अनिवार्य मूल्यों की निरंतर कमी एवं बढ़ती हुई स्वेच्छाचारिता के कारण पाठ्यक्रम में परिवर्तन आवश्यक हो गया है जिससे शिक्षा के माध्यम से सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके। अतः नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों के विकास में शिक्षा को विशेष भूमिका निभानी होगी।

आज श्रेष्ठतम जीवन मूल्यों का विकास करना होगा जो हमारी संस्कृति की विशेषता रही है, जिसके सहारे ही हम वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा को साकार करके विश्वमानवता को मूल्यहीनता के अभिशाप से बचा सकते हैं जिसके लिये सृजनशील नागरिक को बनाने के लिये एक अच्छा पर्यावरण निर्मित करने हेतु हमें निम्न उपाय करने होगें–

1– प्राचीन भारतीय मूल्य जो हमारी पहचान है, पुनःस्मरण करना होगा।

2– पक्षपातपूर्ण रवैया छोड़कर, योग्यताओं का उचित मूल्यांकन करना होगा।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3– अपने साथ, छात्र, समाज, राष्ट्र की चिंता करनी होगी, सर्वे भवन्तु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से कार्य करना होगा।

4– शिक्षा के बाजारीकरण को रोकने हेतु प्रयास करना होगा।

5– पारिवारिक भावना से ओतप्रोत विद्यालयी परिवेश को स्थापित करना होगा वही भाव शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य स्थापित करना होगा।

6– शिक्षक को ,छात्रों को एवं सभी को अपने–अपने कार्यों को पूर्णनिष्ठा, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समर्पण की भावना से, निःस्वार्थ होकर, संयमित रहकर, अनुशासित ढंग से करना होगा।

7– प्राचीन एवं नवीन मूल्यों में समन्वय स्थापित करते हुए शिक्षा के स्वरूप व लक्ष्यों का निर्धारण करना होगा।

8– विद्यालय में सामुदायिक, सामाजिक क्रियाकलापों का आयोजन करके, बालकों को इसमें भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करना होगा।

9– वांछित गुणों, जीवन मूल्यों के विकास हेतु, संप्रेषण हेतु विद्यालयी वातावरण में सुधार करके उन्हें जीवन में 'आत्मसात करने का अवसर देना होगा साथ ही कुछ जीवन मूल्य गुण जैसे स्वच्छता, समय की पाबंदी, सत्य बोलना, ईमानदारी, अनुशासित ढ़ंग से कार्य करना आदि को उनकी आदत में प्रारम्भ स्तर से ही निहित करना होगा।

10– बच्चों को सही मूल्यों, विचारों, कार्यों, से अवगत कराना होगा जिससे उनके व्यक्तित्व के तीनों पक्षों का संतुलित समुचित विकास हो सके।

11– अभिभावकों को प्रोत्साहित करना होगा।

12– छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अभिवृत्ति जागृत करके, विभिन्न मूल्यों के प्रति निष्ठा उत्पन्न करते हुए उन्हें जीवन में उतारने हेतु अभिप्रेरित करना होगा।

13– विद्यालय में सकारात्मक, स्वस्थ वातावरण निर्मित करना होगा जिससे छात्रों को नैतिक ,आध्यात्मिक भावनाओं को विकसित करने का, मूल्यों के प्रति निष्ठावान होने का उन्हें जीवन में उतरने का अवसर प्राप्त हो सके।

14– अनुसंधान कार्यों को बढ़ावा देवा होगा।

15– सभी को अपनी–अपनी जवाबदेही *सुनिश्चित* करनी होगी।

अतः अपनी सभ्यता, संस्कृति, पहचान एवं अस्तित्व को बनाये रखने के लिये, *विश्व,* देश, समाज के कल्याण हेतु मूल्य आधारित शिक्षा आवश्यक है किन्तु उसे यंत्रवत बनाने से बचना होगा। जीवन मूल्यों के साम्प्रतिक क्षरण एवं सरंक्षण पर विचार करते हुए हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि संसार में हमारे देश की पहचान (पहले या वर्तमान में) जिन बातों के लिये रही है उनमें सर्वोपरि है 'मूल्यों के प्रति अटूट निष्ठा'। यह भी स्मरण रखना होगा कि कभी इन्हीं मूल्यों की रक्षा हेतु कभी नये मूल्यों के सृजन के लिये

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हमारे मनीषी पूर्वज अपने प्राणों की आहुति देते रहे हैं। इस प्रकार शिक्षा द्वारा ही मानव में नैतिक मूल्यों, आदर्शों चरित्र एवं सदआचरण का विकास संभव है, इसी के द्वारा मानव व्यवहार को नियंत्रित एवं निर्देशित किया जा सकता है। अतः शिक्षा के सही स्वरूप, "सा विद्या या विमुक्तये " का सही उपयोग करके ही हम मानवीय मूल्यों के विकास में सक्षम हो सकते हैं।

संदर्भ

अग्रवाल डॉ0 बी0बी0 : *आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1997।*

गुप्ता डॉ0 एस0पी0 : *भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2009।*

हरिवंश तरूण : *भारतीय शिक्षा, उसकी समस्यायें तथा विष्व की शिक्षा प्रणालियां, प्रकाश संस्था, नई दिल्ली, 2007*

पाण्डेय डॉ0 रामशकल : *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2007*

राजपूत, जगमोहन सिंह : *क्यों तनावग्रस्त है शिक्षा व्यवस्था, किताब घर प्रकशन, नई दिल्ली, 2008*

रूहेला, एस0पी0 : *विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2008*

लाल डॉ0 रमन बिहारी : *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ,2008*

अखण्ड ज्योति पत्रिका

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies